कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, अप्रैल 2026 | वर्ष 4, अंक 30, पृष्ठ 4



रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रो. पूरन चंद टंडन, प्रो. राम नारायण पटेल, प्रो. हरीश अरोड़ा, प्रो. सुधीर प्रताप सिंह, प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता सहित कई विद्वान वक्ताओं ने शोध प्रविधि के विभिन्न पक्षों पर रखे विचार।

टैलेंट हंट में रितिक पहले और लव दूसरे स्थान पर

नंदनी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की सुगम सोसाइटी ने 4 फरवरी 2026 को सेमिनार रूम में टैलेंट हंट का आयोजन किया। इसमें विभिन्न महाविद्यालयों के विशेष विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में हिन्दू कॉलेज, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, किरोड़ीमल कॉलेज, भीमराव अंबेडकर कॉलेज सहित कई महाविद्यालयों से प्रतिभागी शामिल हुए। विद्यार्थियों ने नृत्य और गायन की प्रस्तुतियां दीं, जिन्हें दर्शकों और निर्णायकों ने सराहा।

निर्णायक की भूमिका में प्रो. सोमा पटनायक के साथ दिग्विजय और आर्यन रहे। कड़े मुकाबले के बाद प्रथम पुरस्कार किरोड़ीमल कॉलेज के रितिक कुमार को मिला। द्वितीय पुरस्कार दिल्ली विश्वविद्यालय सोल के लव सिंह ने प्राप्त किया, जबकि तृतीय पुरस्कार अदिति महाविद्यालय की प्रतिभा को दिया गया। इस मौके पर अनेक विद्यार्थी मौजूद रहे।

जितना शोध में डूबेंगे उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी

प्रो. पूरन चंद टंडन ने कहा–शोध के लिए प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास जरूरी ❍ शोध में नवाचार को केंद्र में रखना आवश्यक : प्रो. हरीश अरोड़ा

भारती बल

नई दिल्ली। जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति बन रही थी। उस समय चार बिंदुओं को विशेष महत्व दिया गया। पहला बिंदु मातृभाषा था। मातृभाषा में शिक्षा कैसे दी जाए। यह विचार इसलिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि मातृभाषा के माध्यम से संस्कृति का संरक्षण संभव है। दूसरा बिंदु भारतीय ज्ञान परंपरा था। प्रश्न यह था कि क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था में भारत बोध दिखाई देता है। शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने पर बल दिया गया। इससे विद्यार्थी अपनी परंपरा को समझ सकें। तीसरा बिंदु अनुवाद था। भारत की ज्ञान परंपरा बहुत विस्तृत है। यह केवल 22 भाषाओं तक सीमित नहीं है। अनेक मातृभाषाओं में भी ज्ञान संचित है। इसे समाज तक पहुंचाना जरूरी है। इसके लिए अनुवाद को प्रमुख माध्यम बताया गया। चौथा बिंदु अनुसंधान था। शोध को दो दृष्टियों से समझाया गया। पहला, डिग्री के लिए किया जाने वाला शोध। दूसरा, व्यक्तिगत रुचि पर आधारित शोध। शोध में नवाचार को केंद्र में रखना आवश्यक है। यह बात दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) के प्रो. हरीश अरोड़ा ने 27 मार्च 2026 को रामलाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी विभाग की ओर से आयोजित 'हिंदी भाषा साहित्य शोध प्राविधि : परम्परा, नवाचार और डिजिटल युग की चुनौतियां' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कही। वह 'परम्परागत हिंदी शोध प्रविधि : स्वरूप और विवेचन' विषय पर बोल रहे थेस

अध्यक्षता कर रहे दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. पूरन चंद टंडन ने कहा कि शोध में डूबना जरूरी है। तभी सफलता मिलती है। शोध केवल व्याख्या नहीं है। यह नए तथ्यों की खोज भी है। उन्होंने कई शोध विधियों का उल्लेख किया। प्रामाणिकता पर जोर दिया। मूल स्रोतों के अध्ययन पर बल दिया। सा. हित्यिक चोरी से बचने को कहा। उन्होंने कहा कि शोध के लिए प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास जरूरी है।

इससे पहले रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि शोध के लिए



विषय का चयन स्पष्ट होना चाहिए : प्रो. राम नारायण पटेल

❍

अच्छा करने के लिए अच्छे से पढ़ना होगा : प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

रचनात्मकता जरूरी है। व्यवहारिकता भी उतनी ही आवश्यक है। उन्होंने बताया कि सच्चा विद्यार्थी बनने के लिए, साहित्य, शोध और करियर में कुछ अच्छा करने के लिए पढ़ना होगा। इस सत्र का संचालन कर रहे हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने पूरे आयोजन की रूपरेखा रखी तो धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अर्चना गौड़ ने किया।

दूसरे सत्र में 'सौन्दर्यशास्त्रीय शोध प्रविधि और हिंदी गीति कविता' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. राम नारायण पटेल ने बताया कि शोध के लिए विषय का चयन स्पष्ट होना चाहिए। उन्होंने इसके दो आधार बताए। पहला अन्वेषक और दूसरा निर्देशक। उन्होंने साहित्य के पांच तत्व बताए। विषय, भाव, विचार, शैली और भाषा। इसी आधार पर अनुसंधान किया जाता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. सुधीर प्रताप सिंह ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और हिंदी शोध की संभावनाएं' विषय पर बोलते हुए कहा कि शोध ज्ञान का विस्तार है। यह निरंतर पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया है। उन्होंने वर्तमान समय को तकनीक का दौर बताया। इसमें बिग डाटा, मशीन लर्निंग और आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस शामिल हैं। इसको लेकर भय है, लेकिन संभावनाएं भी हैं। परंपरा और तकनीक में संतुलन जरूरी है। संचालन डॉ. राजेश गौतम ने किया तो धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रोशन लाल मीणा किया।

तीसरे सत्र वाले हायब्रिड मोड में मॉरीशस से प्रो. कृष्ण कुमार झा ने 'मौखिक और लोक साहित्य परम्परा : शोध प्रविधि और प्रक्रिया' विषय पर बात करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में अभी कम शोध हुआ है। उन्होंने मॉरीशस के नाम की कथा बताते हुए कहा कि लोक कथाओं से संस्कृति को समझा जा सकता है। जर्मनी के हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के प्रो. राम प्रसाद भट्ट ने 'आधुनिक हिंदी शोध प्रविधि और नवाचार' पर बात रखते हुए डिजिटल मानवीकरण और कंप्यूटेशनल विधियों के बारे में समझाया। उन्होंने बताया कि अब पाठ को डिजिटाइज किया जा सकता है। कई ग्रंथों का एक साथ विश्लेषण संभव है। कंप्यूटर तुलना करने में मदद करता है। संचालन की जिम्मेदारी डॉ. गोपाल यादव ने निभाई।

तीन मुख्य सत्रों के साथ तीन तकनीकी सत्र हुए। इसमें दिल्ली विवि और विभिन्न महाविद्यालयों से आए शोधार्थियों और शिक्षकों ने 28 शोध पत्र प्रस्तुत किए। इन सत्रों को संपन्न कराने में डॉ. एनी रे, हिंदी पत्रकारिता के डॉ. अटल तिवारी, डॉ. विशाल शर्मा और देवेन्द्र नाथ तिवारी की मुख्य भूमिका रही तो धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मानवेश नाथ दास ने किया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सुरेन्द्र कुमार और सह संयोजक डॉ. राजेश गौतम ने शिक्षकों, हिंदी साहित्य परिषद के विद्यार्थियों का आयोजन की सफलता के लिए आभार जतायास इस मौके पर प्रो. संजय कुमार शर्मा, प्रो. श्रुति आनंद, डॉ. साधना सहित कई विभागों के शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

विद्यार्थी मराठी–हिंदी पत्रकारिता से हुए परिचित

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों के एक समूह ने मुंबई साहित्य और मीडिया महोत्सव में प्रतिभाग किया। 15–16 नवंबर को होने वाले दो दिवसीय महोत्सव में विद्यार्थियों ने साहित्य और पत्रकारिता के आयामों के बारे में जाना। यह महोत्सव हिंदी के प्रथम समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' के द्विशताब्दी वर्ष पर केंद्रित रहा। इस श्रृंखला में हिंदी पत्रकारिता के विकास में हिंदी–मराठी भाषी संपादकों और पत्रकारों के योगदान पर व्याख्यान हुए।

महोत्सव के मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने कहा, महोत्सव महज हिंदी–मराठी



पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने मुंबई साहित्य और मीडिया महोत्सव में भाग लिया।

पत्रकारिता को मनाने का दिन नहीं है। यह दिन बाल गंगाधर तिलक और बाबूराव विष्णु पराड़कर के जीवन व उनकी पत्रकारिता को जानने का अवसर है। महोत्सव में मराठी और हिंदी–पत्रकारिता को लेकर कई सत्र हुए। शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। हिंदी पत्रकारिता के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी उत्कर्ष कुमार ने कविता पाठ किया।

विभाग के शिक्षक डॉ. विशाल शर्मा और डॉ. देवेन्द्र नाथ तिवारी के नेतृत्व में विद्यार्थी मुंबई प्रेस क्लब भी गए। उसके इतिहास, संचालन और उपयोगिता के बारे में जानकारी मिली। इसी क्रम में मुंबई के रंगशीला थिएटर का भ्रमण किया। उसके संस्थापक और डायरेक्टर अवनीश मिश्रा से बातचीत की, जिसमें उन्होंने कहा कि पत्रकारिता के विद्यार्थियों को सब विषय पढ़ने चाहिए। जितना आप पढ़ेंगे, उतना ज्यादा बात कर पाएंगे। मुंबई के मराठी पत्रकार संघ के इस महोत्सव में बाबा साहब आंबेडकर विश्वविद्यालय कोलकाता की कुल. पति प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रो. हितेंद्र मिश्र, मुंबई मराठा पत्रकार संघ के अध्यक्ष संदीप चव्हाण, महाराष्ट्र के मंत्री आशीष सेलार सहित कई पत्रकार, लेखक, कवि और विद्यार्थी मौजूद रहे। महोत्सव की रूपरेखा प्रो. राममोहन पाठक ने रखी।

रामचरितमानस में छिपा है सफल जीवन का रहस्य

अंकुर

नई दिल्ली। रामचरितमानस के दोहों से हमें अपना नजरिया बदलना होगा। उसका पूरा अवलोकन करना होगा। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 15 जनवरी 2026 को संगोष्ठी की ओर से आयोजित रामचरितमानस दोहा वाचन प्रतियोगिता के अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो. रामराज उपाध्याय ने कही। आयोजन में मुख्य अतिथि रहे उद्योगपति और रामचरितमानस के जानकार राजकुमार गोयल ने कहा कि रामचरितमानस के पठन पाठन से एक तरह से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने दोहा वाचन के साथ अपने वक्तव्य की शुरुआत की। मेजर प्रो. संजय कुमार ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस सत्र के बाद विभिन्न महाविद्यालयों से आए विद्यार्थियों ने रामचरितमानस दोहा वाचन प्रतियोगिता में प्रतिभा का परिचय दिया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका हिंदी विभाग के शिक्षक डॉ. रोशनलाल मीणा, डॉ. सुनयना, हिंदी पत्रकारिता के डॉ. विशाल शर्मा ने निभाई। आयोजन का संचालन डॉ. राजेश गौतम ने किया। इस मौके पर महाविद्यालय के शिक्षक बड़ी संख्या में प्रतिभागी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

आदिवासियों की कला पारंपरिक ज्ञान बना भूजल का विज्ञान

भूजल खोज के पारंपरिक मॉडल ने डॉ. रितेश आर्य को दिलाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

भारतीय लोक संस्कृति और आस्था के बड़े पर्व बांस के पवित्र शिल्प के बिना अधूरे हैं। बांस से बनी वस्तुएं केवल सामान नहीं बल्कि हमारी परंपरा और संस्कृति की पहचान हैं। तीज में पनपतिया, छठ में दऊरा, सूप, डागरा, डलियां और चंगेली का विशेष महत्व होता है। शादी विवाह में डाला और रिश्तेदारों को भेंट भेजने के लिए चंगेली का उपयोग किया जाता है। पूजा पाठ में सुपली, फूल डाली और डलिया पवित्रता का प्रतीक मानी जाती है। ग्रामीण जीवन और लोक परंपराओं में इन बांस शिल्पों का सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व सदियों से बना हुआ है।



दीपक कुमार

इन वस्तुओं को बनाने का अधिकांश काम बिहार के मिथिला क्षेत्र में होता है। इसमें सीतामढ़ी में डागरा, बसबीटा में छीटा, जोगियारा में डलिया बनाई जाती है। भागलपुर के कारीगरों के साथ झारखंड के गिरिडीह, पलामो, लातेहार, चतरा और मधुपुर के आदिवासी समुदाय के लोग यह काम करते हैं। समाज में लंबे समय तक उपेक्षित रहे इन लोगों के हाथों से बने बांस के सामान पूजा–पाठ में सबसे पवित्र माने जाते हैं। यह उनके श्रम और कला का सम्मान है। इन कारीगरों के लिए बांस का शिल्प ही रोजगार का मुख्य साधन है। त्योहारों के समय इनके सामान की बिक्री से ही परिवार का खर्च चलता है। आज प्लास्टिक और मशीन से बने सस्ते सामान के कारण यह पुश्तैनी कला संकट में है।

बांस के उत्पाद पूरी तरह पर्यावरण के अनुकूल होते हैं। हमें इन्हें बढ़ावा देना चाहिए। बाजार में सुपली, डलिया या दऊरा खरीदते समय मोलभाव से बचना चाहिए। ऐसा करके हम कारीगर परिवारों की मदद कर सकते हैं। इसी आशा के साथ 'कैम्पस कनेक्ट' का अप्रैल अंक आपके सामने प्रस्तुत है...।

प्रो. फातमी ने नई पीढ़ी में विचारों का दीप जलाया

प्रो. अली अहमद फातमी को शारिब रुदौलवी अवार्ड

उत्कर्ष कुमार

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में जन्मे अली अहमद फातमी पर शायरी, विमर्श और तरक्की पसंद सोच ने गहरी छाप छोड़ी। बचपन से ही उनका संबंध शब्दों से होने लगा। उन्होंने हिंदी, उर्दू, और अंग्रेजी भाषा पर समान अधिकार प्राप्त किया।

उनकी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बीता। यहां वह सिर्फ छात्र नहीं रहे बल्कि उर्दू विभाग में प्रोफेसर और विभाग अध्यक्ष भी बने। वह प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव बने। इसी के साथ हमेशा दबे–कुचले समाज की आवाज को साहित्य के जरिए उठाते रहे। प्रो. फातमी मुख्य रूप से आलोचना और शोध के क्षेत्र में काम करते रहे हैं। आज उनके खाते अनेक अकादमिक कार्य दर्ज हैं, जिनमें 30 लिखी और 54 संकलित पुस्तकें शामिल हैं। प्रो. फातमी की 'तरक्की पसंद तहरीक–सफर दर सफर' यादगार किताब है। यह किताब उनकी विचारधारा का सबूत है, जिसने उन्हें झुकने नहीं दिया। दूसरी ओर 'प्रेमचंद : नए तनाजुर में' उन्होंने मुंशी प्रेमचंद की पीड़ा और उनके कहानियों के दर्द को नए नजरिए से प्रस्तुत किया है।

प्रो. फातमी की जिंदगी में सबसे दर्दनाक मोड़ 7 मार्च 2021 को आया। प्रयागराज विकास प्राधिकरण ने लूकरगंज में उनके पुश्तैनी घर को मलबे में बदल दिया। यह सिर्फ मकान नहीं टूटा था बल्कि उनके जीवन भर की कमाई और हजारों अनमोल किताबों का निजी पुस्तकालय भी मिट गया था। उन्होंने इसे बड़ी मेहनत से बनाया था।

एक लेखक के लिए उसकी किताबों का खो जाना उसकी आत्मा के खो जाने जैसा था। दुखों और संघर्षों के बावजूद प्रो. अली अहमद फातमी ने लिखना और बोलना नहीं छोड़ा। उन्हें सज्जाद जहीर सम्मान और प्रेमचंद सम्मान जैसे कई पुरस्कार मिले।

हाल ही में लखनऊ के निशातगंज स्थित कैफी आजमी अकादमी में उन्हें प्रतिष्ठित प्रो. शारिब रुदौलवी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस मौके पर उत्तर प्रदेश के पूर्व कार्यवाहक मुख्यमंत्री डॉ. अम्मार रिजवी और हा. ईकोर्ट के जस्टिस सैयद कमर हसन रिजवी जैसी हस्तियां मौजूद रहीं। संचालन प्रो. अब्बास रजा नैयर ने किया। प्रो. रेशमा परवीन, डॉ. मूसा रजा, आसिम रजा आदि भी मौजूद थे। आज भी प्रो. फातमी अपनी बिखरी हुई दुनिया के बीच कागज और कलम के सहारे समाज को जगाने और उर्दू अदब की सेवा कर रहे हैं। प्रो. शारिब रुदौलवी का उर्दू आलोचना के क्षेत्र में बड़ा काम है, उन्हीं की स्मृति में यह अवॉर्ड दिया जाता है।



शारिब रुदौलवी अवॉर्ड से सम्मानित हुए प्रो. अली अहमद फातमी।



तरंग

टैथिस फासिल म्यूजियम एंड जियोहेरिटेज सेंटर के संस्थापक *डॉ. रितेश आर्य* पिछले दिनों रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस बीच उनसे भूविज्ञान विभाग द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी *अस्मित दीप झा* ने भूजल अन्वेषण, हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ते जल संकट, भूतापीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, जियोहेरिटेज संरक्षण जैसे अनेक मसलों पर बात की, जिसका उन्होंने बेबाकी से जवाब दिया। बातचीत के संपादित अंश *कैम्पस कनेक्ट* के पाठकों के लिए पेश हैं...

TARANG 90.0 FM

सर, हिमालय में भूजल अन्वेषण के लिए आपका मॉडल क्या था?

मेरा मॉडल बहुत सरल था। यह पारंपरिक बुद्धिमत्ता और ज्ञान पर आधारित था, जिसे हमारे पूर्वजों ने अनादिकाल से अर्जित किया था। उन्होंने विभिन्न शैल इकाइयों, मूलतः विभिन्न लिथोलॉजी, भू–आकृतिक विशेषताओं और संरचनात्मक पैटर्न की पहचान करके विभिन्न हाइड्रो जियोलॉजिकल स्थलों का पता लगाया था। मैंने बस उनका अध्ययन किया। उसे आधुनिक रूप दिया और एक विश्वसनीय मॉडल तैयार किया। जो पूरे हिमालय, भूजल संसाधनों की उपस्थिति और उनकी गति को दर्शाता है। यह एक सीमा भी थी । मेरा मॉडल वास्तव में डार्सी के नियम द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को पार करता है। जो यह दिखाता है कि भूजल एक निश्चित पैटर्न में चलता है। परंतु यह कोई नहीं समझा सकता कि हमें हिमालय की चोटियों पर भूजल क्यों मिल रहा है। इन सभी आंकड़ों और लगभग दस हजार बोरवेलों के डाटा को एकत्र करके, हमने विभिन्न भूवैज्ञानिक क्षेत्रों का अध्ययन किया। एक मॉडल तैयार किया। यह हिमालय की हाइड्रो स्ट्रेटिग्राफिक जोनेशन, विभिन्न हाइड्रोस्ट्रेटिग्राफी और भूजल दोहन के समय परतों के व्यवहार पर आधारित था। इस मॉडल ने विभिन्न क्षेत्रों में भूजल अन्वेषण को वास्तव में सरल बना दिया। यह हमारे पारंपरिक ज्ञान पर आधारित एक बहुत सरल मॉडल था।

जल संकट की स्थिति में पारंपरिक भूजल अन्वेषण विधियां आधुनिक तकनीक की तुलना में प्रभावशीलता और विश्वसनीयता के मामले में कैसी हैं?

जब हम भूजल जांच में उपयोग होने वाले आधुनिक उपकरणों की बात करते हैं तो मुख्यतः हम भू–भौतिकीय उपकरणों और रिमोट सेंसिंग की बात कर रहे होते हैं। यदि हम समतल क्षेत्रों, पठारों या इंडो–गंगेटिक मैदानों में काम कर रहे हों तो ये कुछ हद तक सहायक हो सकते हैं। जबकि जब हम हिमालयी क्षेत्रों की बात करते हैं तो ये दोनों तकनीकें लगभग निष्क्रिय हो जाती हैं क्योंकि हिमालय में हमें एकसमान संरचनाएं नहीं मिलतीं। वहां इतने अधिक मोड़ और भ्रंश हैं कि भू–भौतिकीय जांच के लिए आवश्यक समरूपता कभी प्राप्त नहीं होती। रिमोट सेंसिंग भी अधिक सहायक नहीं होती क्योंकि पूरी जांच क्षेत्र में जाकर करनी पड़ती है। हर जांच स्थल दूसरे स्थान से अलग होता है। कई बार कुछ ही मीटरों के अंतर पर एक सफल और एक असफल बोरवेल मिल सकता है। यह उस लिथोलॉजी पर निर्भर करता है, जिसमें हम ड्रिलिंग कर रहे हैं। जब हम यह जांच करते हैं तब हमें लिथोलॉजी, भू–आकृति, संरचनाओं और यह समझना होता है कि पानी कहां से आएगा। किस दिशा में प्रवाहित होगा। यदि हम इन चार स्थितियों का ध्यान रख लें। फिर हमारी सफलता दर लगभग सौ प्रतिशत हो सकती है। यही इस मॉडल और पारंपरिक ज्ञान की खूबसूरती है, जो आधुनिक अन्वेषण विधियों से कहीं अधिक प्रभावी है।

सर, आज के समय में जलवायु परिवर्तन और भविष्य के वैश्विक परिदृश्य के संदर्भ में भूजल के सामने कौन–कौन से खतरे हैं?

भारत को तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है। एक प्रायद्वीपीय भाग, दूसरा इंडो गंगेटिक मैदान और तीसरा हिमालयी क्षेत्र। प्रायद्वीपीय भाग और इंडो गंगेटिक मैदान में, प्रायद्वीपीय क्षेत्र मुख्यतः वर्षा आधारित या मौसमी है। वहां भूजल पुनर्भरण भी बारिश पर निर्भर करता है। इंडो गंगेटिक मैदान और हिमालयी क्षेत्र में महज बारिश ही नहीं बल्कि ग्लेशियरों के पिघलने से भी पुनर्भरण होता है। हिमालय में अभी तक भूजल समाप्त नहीं हुआ है क्योंकि ग्लेशियर उसे लगातार पोषित कर रहे हैं। इसमें मौसमी उतार–चढ़ाव होते हैं, जो बारिश पर निर्भर करते हैं। जबकि जब हम भारत के प्रायद्वीपीय हिस्से की बात करते हैं, क्योंकि वहां अधिकांश पुनर्भरण मौसमी और वर्षा आधारित है। पर्वतीय क्षेत्र, हिमालयी क्षेत्र, प्रायद्वीपीय भाग या गंगीय मैदान। हिमालयी क्षेत्र और इंडो गंगेटिक मैदान में भूजल की स्थिति अभी भी बहुत अच्छी है क्योंकि ग्लेशियरों का पिघला हुआ जल भूजल के रूप में निकलकर नदियों में योगदान देता है। जबकि प्रायद्वीपीय भागों में कई स्थानों पर भूजल का अत्यधिक दोहन हुआ है। पानी निकालने के लिए कोई सख्त कानून नहीं है। बहुत सारा भूजल व्यर्थ चला जाता है। वह पानी, जिसे बनाने में हजारों या लाखों वर्ष लगे हैं। खेतों की सिंचाई में बिना सोच समझ कर खर्च किया जा रहा है। आज भूजल को संसाधन के रूप में भी गंभीरता से नहीं लिया जाता। एक बार कुआं ड्रिल हो गया तो हम लगातार पानी निकालते रहते हैं। इसी के साथ यह भूल जाते हैं कि यह भी एक सीमित संसाधन है। नदियों और झरनों को हम इसलिए महत्व देते हैं क्योंकि वे दिखाई देते हैं। भारत में भूजल न केवल कृषि विकास में बल्कि पेयजल और औद्योगिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। फिर भी एक संसाधन के रूप में इसे अभी तक वह महत्व नहीं मिला है, जिसका यह हकदार है।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड हासिल करने व भारतीय सेना के साथ काम करने का आपका अनुभव कैसा रहा?

उस समय मैं हिमाचल सरकार में कार्यरत था और मुझे परम पावन दलाईलामा के तिब्बती निर्वासित सरकार कार्यालय से एक परियोजना मिली। हम लद्दाख में उन तिब्बती प्रवासियों के लिए जल विकास परियोजना पर काम कर रहे थे। चीनी आक्रमण के बाद दलाईलामा भारत आ गए थे। उनके साथ आए लोग लद्दाख के विभिन्न हिस्सों में बस गए थे। मुझे उनके लिए भूजल उपलब्ध कराने का कार्य सौंपा गया। उस परियोजना को पूरा करने के बाद यह लद्दाख में भूजल विकास के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय बन गया, क्योंकि उससे पहले पूरा जल प्रबंधन सिंधु नदी से पानी पंप करने और सतही जल आपूर्ति योजनाओं पर निर्भर था। इससे लद्दाख में जल योजना और विकास की अवधारणा ही बदल गई। इसी दौरान मेरा संपर्क भारतीय सेना से हुआ। उन्होंने हमारी सेवाएं लीं। कारगिल युद्ध के बाद हम लद्दाख के लेह क्षेत्र में, लगभग ग्यारह हजार तीन सौ फीट की ऊंचाई पर एक परियोजना पर काम कर रहे थे। वहां हमें आर्टीजियन स्थिति मिली और वह मेरे लिए अत्यंत रोमांचक अनुभव था। पहले हम पानी खोजने के लिए संघर्ष कर रहे थे। लोग मुझसे पूछते थे कि लद्दाख के इस ऊंचाई वाले शीत मरुस्थल में पानी कितने समय तक रहेगा। जब 2002–2003 में हमने यह सफलता प्राप्त की तो यह विश्व की सबसे ऊंची आर्टीजियन स्थिति बन गई। हमें गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान मिला। केवल मैं ही नहीं पूरी हाइड्रो जियोलॉजिकल समुदाय इस उपलब्धि से अत्यंत खुश था। अब लगभग 23–24 वर्ष बीत चुके हैं। वह आर्टीजियन स्थिति आज भी उसी ऊंचाई पर सक्रिय है। यदि ऊंचाई वाले क्षेत्र सुरक्षित हैं तो इसका अर्थ है कि पूरी प्रणाली का हेड सुरक्षित है। यदि हम भू–हाइड्रोलॉजिकल चक्र को देखें तो यह ग्लेशियर पूरे तंत्र के मस्तिष्क की तरह हैं। हिमालय के अधिकांश ग्लेशियर या तो समाप्त हो चुके हैं या समाप्ति की कगार पर हैं। अभी भी कुछ ग्लेशियर बचे हुए हैं, जो पूरे भूजल तंत्र को पोषित करते रहेंगे। जब तक वे मौजूद हैं। हिमालय और गंगीय मैदान में घबराने की आवश्यकता नहीं है।

उभरते हुए भूवैज्ञानिकों के लिए कुछ प्रेरणादायक शब्द कहें, जो हमें इस निरंतर विकसित होते क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन दें?

अक्सर यह संदेह रहता है कि यदि मैं भूविज्ञान पढ़ रहा हूं तो मुझे इससे क्या मिलेगा? सच्चाई यह है कि हमें पृथ्वी के बहुत अधिक डॉक्टर्स की आवश्यकता है। भूवैज्ञानिक किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। हमारे यहां पर एक व्यवस्थित तंत्र की कमी रही है, जिसे विकसित करना होगा। ध्यान रखिए कि यदि आप लगातार अध्ययन करते रहे हैं। इस परिस्थिति में अपने ज्ञान को व्यवहार में लाएं। निश्चित रूप से पृथ्वी प्रणाली की स्थिति अभी अच्छी नहीं है। जल संकट, तेल, जीवाश्म, जलवायु परिवर्तन, भूस्खलन, खनिज अन्वेषण जैसे अनेक खतरे मौजूद हैं। भूवैज्ञानिक किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं। अपने ज्ञान को व्यवहार में लाएं तो आप निश्चित रूप से पृथ्वी प्रणाली में सुधार ला सकते हैं। चाहे वह जल संसाधन हों, खनिज संसाधन हों, तेल संसाधन हों, सड़क के निर्माण हों या भवनों की स्थिति। स्थिरता हो या भूकंप रोधी संरचनाएं। आप कहीं भी जाएं। एक अच्छे भूवैज्ञानिक की आवश्यकता होती है। भूवैज्ञानिक समुदाय को एक मजबूत पाठ्यक्रम और उभर रहे भूवैज्ञानिकों के लिए स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करना होगा। विद्यार्थियों को स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए। भूविज्ञान के प्रति अपना प्रेम बनाए रखें। एक बार जब आप अपने क्षेत्र से प्रेम करने लगते हैं तो अवसरों की कमी नहीं रहती। मेरा मानना है कि 21वीं सदी भूवैज्ञानिकों की सदी है। हमें खनिज अन्वेषण, नई खोजों और पृथ्वी विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में बहुत कार्य करना बाकी है। ध्यान देने की बात है कि जो विद्यार्थी भूविज्ञान पढ़ रहा है, उसे प्रेरित महसूस करना चाहिए कि भविष्य में उसके पास न केवल नौकरी के अवसर होंगे बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था, राजनीति और पर्यावरण को बदलने का अवसर भी होगा।

आरएलएसी ने एसबीएससी को 124 रनों से हराया



रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने कप्तान डॉ. रोशन लाल मीणा के साथ जताई खुशी।

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय और शहीद भगत सिंह महाविद्यालय प्रातः के बीच 12 जनवरी 2026 को टी–20 मैच खेला गया। मुकाबले में रामलाल आनंद महाविद्यालय ने 124 रनों के बड़े अंतर से शहीद भगत सिंह महाविद्यालय को शिकस्त दी।

रामलाल आनंद महाविद्यालय ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। ओपनर डॉ. विशाल गोस्वामी 19 रन के स्कोर पर अपना विकेट गंवा बैठे। इसके बाद डॉ. पवन शर्मा ने 47 गेंदों पर 14 चौके

- इंडीविजुअल टी–20 मैच में डॉ. गंधर्व कौशिय और डॉ. पवन ने 3–3 विकेट लिए
- आरएलएसी के डॉ. पवन शर्मा 75 रनों की पारी खेल कर मैन ऑफ द मैच बने

की मदद से 75 रनों की पारी खेली। डॉ अंकित कुमार 23 गेंद खेल कर 22 रन बनाए। डॉ. अरुण गौतम ने 8 चौके लगाकर 45 रनों की पारी खेली।

रामलाल आनंद महाविद्याल के कप्तान डॉ. रोशनलाल मीणा 2 चौके की मदद से नाबाद 9 गेंद में 12 रनों की भूमिका निभाई। इस प्रकार रामलाल आनंद महाविद्यालय ने 20 ओवर में 6 विकेट गंवा कर 199 रनों का बड़ा लक्ष्य दिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी शहीद भगत सिंह महाविद्यालय प्रातः की टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। 15.4 ओवर में 74 रन के मामूली स्कोर पर टीम ऑल आउट हो गई। आरएलएसी की तरफ से गेंदबाजी में डॉ. गंधर्व कौशिय और डॉ. पवन शर्मा ने तीन–तीन विकेट चटकाए। डॉ. श्यामजीत ने 2 और डॉ. अरुण गौतम ने एक विकेट झटका। 75 रनों की शानदार पारी खेलने वाले डॉ. पवन शर्मा को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

रोमांचक मुकाबले में एक और जीत RLAC के नाम

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय और श्यामलाल महाविद्यालय के बीच 25 जनवरी 2026 को टी–20 क्रिकेट मैच खेला गया। इस करीबी मुकाबले में रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम 8 रनों से विजयी हुई। डॉ. गंधर्व कौशिय ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए रामलाल आनंद की ओर से सबसे ज्यादा चार विकेट झटके।

रामलाल आनंद महाविद्यालय की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। टीम की बल्लेबाजी औसत रही। ऊपरी क्रम से लेकर निचले क्रम तक का कोई भी बल्लेबाज टिककर खेल नहीं पाया।

कप्तान डॉ. रोशनलाल मीणा ने 3 छक्के और 2 चौके की मदद से 7 गेंद में 27 रनों का योगदान दिया। डॉ. सुरेंद्र कुमार ने 3 छक्के की मदद से 21 रनों का योगदान दिया। डॉ. हेमंत भारद्वाज ने 23 और अमित ने 24 रन बनाए। 20 ओवर में रामलाल आनंद महाविद्यालय ने 7 विकेट गंवाकर 160 रनों का सम्मान जनक स्कोर खड़ा किया।

161 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्यामलाल महाविद्यालय की टीम 20 ओवर में 9 विकेट गंवाकर 152 रन ही बना सकी। इस करीबी मुकाबले में रामलाल आनंद महाविद्यालय ने 8 रनों से जीत हासिल की।

रामलाल आनंद महाविद्यालय की ओर से गेंदबाजी में 4 विकेट डॉ. गंधर्व कौशिय ने लिए। वहीं डॉ. हेमंत भारद्वाज और डॉ. अरुण गौतम ने 2–2 विकेट हासिल किए। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए आरएलएसी के डॉ. गंधर्व कौशिय को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया।

एआई से मिलेगी सफलता : मित्तल

पीयूष सिंह

नई दिल्ली। बाजार उनकी नौकरी छीन रहा है, जो एआई का इस्तेमाल नहीं जानता है। इसके विपरीत कई लोग अपने काम में एआई का प्रयोग कर नौकरियों में पदोन्नतियां प्राप्त कर रहे हैं। यह बात 20 नवम्बर 2025 को रामलाल आनंद महाविद्यालय के कॅरिअर काउन्सलिंग और प्लेसमेंट सेल पाथवे की ओर से आयोजित आनलाइन सेमिनार के विशेषज्ञ पौरुष मित्तल ने कही।

उन्होंने बोला कि विद्यार्थियों के अंदर एआई इस्तेमाल करने की जिज्ञासा होनी चाहिए। इस दौरान विद्यार्थियों को कुछ कार्यभार दिया गया। उसमें अच्छा प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को उन्होंने अपनी कम्पनी में प्रशिक्षण का प्रस्ताव दिया। इस दौरान प्रश्नकाल में विद्यार्थियों के प्रश्नों का जबाब देते हुए उन्होंने कहा कि एआई के जमाने में अति सक्रियता जरूरी है। इस आनलाइन सेमिनार में पाथवे के संयोजक डॉ. पवन शर्मा, सहसंयोजिका सुश्री सृजना सिंह और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

संविधान राष्ट्र की आत्मा होती है

माही

नई दिल्ली। संविधान की शक्ति तभी बढ़ती है जब देश के नागरिक इसके प्रति जागरूक अच्छे से जागरुक हों। यह बात सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता और एनआइए के स्पेशल पब्लिक प्रॉसिक्यूटर शान्तनु जुगतावत ने रामलाल आनंद महाविद्यालय में संविधान दिवस के अवसर पर 20 नवम्बर 2025 को अंबेडकर स्टडी सर्किल के कार्यक्रम में कही।

वक्ता सत्र में शान्तनु जुगतावत ने विशेष रूप से अनुच्छेद 21 पर जोर देते हुए कहा कि जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार भारतीय नागरिकों के सम्मान, सुरक्षा और गरिमा की रक्षा का सबसे मजबूत स्तंभ है। इस दौरान समिति संयोजक गंधर्व कौशिय, डॉ. विकास कुमार, डॉ. जतिन, डॉ. दीपक सेतिया सहित अनेक विद्यार्थी मौजूद रहे।

पाठक से लेखक बनने की कला पर कार्यशाला

अमृत कुमार पांडेय

नई दिल्ली। हर व्यक्ति के भीतर कहने के लिए एक अलग किरदार होता है, जिसे बाहरी प्रेरणा के माध्यम से उजागर किया जा सकता है। यह बात प्रो. राजीव माथुर ने रामलाल आनंद महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की समिति युबिक्विट्स की ओर से 21 जनवरी 2026 को आयोजित 'पाठक से लेखक तक' नामक कार्यशाला में कही।

प्रो. माथुर ने कहा कि यदि कोई लेखक स्वयं के अनुभवों और जीवन की साधारण घटनाओं को अपने शब्दों में रोचक ढंग से प्रस्तुत कर दे तो लेखन सहज और प्रभावशाली बन जाता है। उन्होंने बताया कि लेखन का सबसे उपयुक्त तरीका आम जीवन की अनुभूतियों और अनुभवों को आधार बनाना है।

प्रो. राजीव माथुर ने व्यक्तिगत जीवन को पूरी तरह सार्वजनिक करने से जुड़े जोखिमों की ओर भी ध्यान दिलाया। साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि लेखक को पात्रों का चयन इस प्रकार करना चाहिए कि वे काल्पनिक प्रतीत हों।

अपनी पुस्तक 'वन थाउजेंड डेज' का उदाहरण देते हुए प्रो. राजीव माथुर ने बताया कि निजी जीवन के दुख, पीड़ा और भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम लेखनी है। उन्होंने कहा कि लेखन स्वांतः सुखाय का एक मजबूत और उपयोगी साधन है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों के साथ समिति की अध्यक्षा महक गोयल सहित समिति अनेक पदाधिकारी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शुचिता ने दिया स्वच्छता का संदेश



रामलाल आनंद महाविद्यालय में विद्यार्थियों ने स्वच्छता अभियान चलाकर परिसर को स्वच्छ रखने का संदेश दिया।

अविनाश

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में 21 जनवरी 2026 को स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। यह अभियान इतिहास विभाग की समिति तवारीख और स्वच्छता समिति शुचिता के संयुक्त सहयोग से सम्पन्न हुआ। अभियान की शुरुआत दोपहर 12 बजे कॉलेज के मुख्य मंच से की गई।

स्वच्छता अभियान का आयोजन प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन तथा संयोजक डॉ. अरविंद और प्रभारी शिक्षिका डॉ. पारुल लाउ गौड़ की देखरेख में संपन्न हुआ। अभियान के दौरान विद्यार्थियों की अलग–अलग टोलियों ने परिसर में सफाई की। विद्यार्थियों ने न केवल कचरा इकट्ठा किया बल्कि अपने सहपाठियों को कूड़ा न फैलाने और रिसाइकिलिंग के महत्व के प्रति भी जागरुक किया। परिसर से प्लास्टिक कचरा हटाकर उसे नगर निगम के नियमों के अनुसार निपटाया गया। यह स्वच्छता अभियान कॉलेज की कैंटीन से लेकर प्रवेश द्वार तक चलाया गया।

इस अभियान के दौरान तवारीख समिति के संयोजक डॉ. अरविंद पटेल, शिक्षिका डॉ. पारुल लाउ गौड़, शुचिता समिति की संयोजिका डॉ. ऋतम्भरा मिश्रा और विद्यार्थियों ने भी अपनी भूमिका निभाई

लेखन, मुहावरे और शब्दों की बनावट से सजी समदृष्टि

आलोक यादव

नई दिल्ली। रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में सभी विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। रामलाल आनंद महाविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन, समदृष्टि एवं सृजन वाल मैगजीन समिति और हिंदी साहित्य परिषद के तत्वावधान दो दिवसीय रचनात्मक लेखन सहित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ।

दो दिवसीय आयोजन में पहले दिन 16 जनवरी को मुहावरा प्रतियोगिता में शिक्षकों और गैर शिक्षण कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। सेमिनार कक्ष में हिंदी साहित्य परिषद के संयोजक डॉ. राजेश कुमार ने परिणाम घोषित करते हुए कहा कि हम गांव में देखते हैं तो बड़े बुजुर्ग और उम्रदराज लोग अपनी दिनचर्या में मुहावरे और कहावतें बोलते रहते थे। हमें याद नहीं करना पड़ता था। इस आयोजन को बड़े मंच तक ले जाना होगा।



रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में सभी विभाग के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

- रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने रचनात्मकता बिखेरी और अर्थ समझाया
- मुहावरे प्रतियोगिता में डॉ. दीप्ति, डॉ बसंत, दीपांशु और नीरज की टीम विजेता रही

शिक्षकों की मुहावरा प्रतियोगिता में डॉ. दीप्ति और डॉ. बसंत मिश्र की टीम जीती। दूसरे नंबर पर डॉ. श्यामजीत यादव और देवोश्री की टीम रही। गैर शिक्षण कर्मचारी मुहावरा प्रतियोगिता में दीपांशु और नीरज की टीम जीती। टीम का फाइनल देवा और पंकज की टीम के साथ हुआ।

पुस्तकालय लॉन में खेल मनोरंजन भी हुआ। इसमें अक्षरों से शब्द बनाने थे। खेल में टीम के दोनों सदस्य एक दूसरे के विपरीत मुंह करके बैठे थे। दोनों एक अक्षर को चुनकर सामने रखते। दोनों अक्षरों को मिलाकर सार्थक शब्द बनाना होता। देखते ही देखते लॉन में शिक्षकों और विद्यार्थियों का जमावड़ा होने लगा। सभी ने बारी–बारी से इस खेल को खेला। संयोजिका प्रो. अर्चना गौड़ ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम दो दिन तक चला। समिति के सदस्य दिन–रात एक करके इसे सफल बनाने में लगे रहे। इसके लिए मैं समिति के सदस्यों को विशेष धन्यवाद देती हूं।

इस मौके पर प्रो. मुक्ता दत्ता मजूमदार, प्रो. संजय कुमार शर्मा, हिंदी के विभाग अध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. मानवेश नाथ दास, डॉ रोशन लाल मीणा, डॉ. एनी रॉय, डॉ. सुनैना शर्मा, डॉ. गोपाल यादव आदि शिक्षक और विभिन्न विभागों के विद्यार्थी मौजूद रहे।

रॉबिन ने हासिल किया प्रथम स्थान

निधि

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 21 नवंबर 2025 को अंबेडकर स्टडी सर्किल ने संवैधानिक ज्ञान खोज नामक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की।

यह प्रतियोगिता दो चरण में हुई। पहला चरण सामान्य ज्ञान का रहा। इसमें संविधान से जुड़े आसान और मध्यम स्तर के सवाल पूछे गए। दूसरा चरण रैपिड फायर का रहा, जिसमें प्रतिभागियों को तेज गति से जवाब देने का नियम था। दोनों राउंड पूरे होने के बाद सभी प्रतिभागियों के अंक जोड़े गए। इसके बाद विजेताओं की घोषणा की गई। प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए रॉबिन सिंह ने पहला, कृतिक गुप्ता ने दूसरा और आसिफ रजा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। विजेताओं को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर समिति के संयोजक गंधर्व कौशिय, सहित कई विद्यार्थी मौजूद रहे।



एलुमनाइ मीट में श्रेष्ठ विद्यार्थियों को प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान व एलुमनाइ कमेटी के अध्यक्ष ने सम्मानित किया।

जूनियर्स को रास्ता दिखाएं एलुमनाइ

उत्कर्ष कुमार

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय ने एलुमनाइ मीट 2026 का आयोजन किया। मीट में महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया।

28 फरवरी को हुई मीट में प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा कि इस महाविद्यालय का जो बीज अंकुरित किया गया था। वह मात्र चालीस विद्यार्थियों के साथ शुरू हुआ था, जहां बीए प्रोग्राम का सिर्फ एक कोर्स चलता था। इसमें कुछ शिक्षक एवं कर्मचारी नियुक्त किए गए। ग्रीन पार्क के एक घर में इसकी स्थापना हुई। इसके बाद इसे मौजूदा भवन में लाया गया।

महाविद्यालय की उपलब्धियां बताते हुए प्राचार्य ने कहा कि अगर आप आज और तीन दशक पहले इस महाविद्यालय की छवि को देखें तो आपको महाविद्यालय पर गर्व होगा। आप के अथक प्रयास और कामयाबी से यह महाविद्यालय अब देश के तीस प्रतिशत महाविद्यालयों में से एक बन चुका है। आप अपने कॅरियर के मुकाम पर पहुंच गए हैं। उसी तरह का रास्ता जूनियर्स को दिखाएं। चाहे वह इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग हो, इंटर्नशिप हो, इंडस्ट्रियल प्लेसमेंट्स हों। इसमें आपकी सहभागिता, आपका योगदान आपके जूनियर्स को कॅरियर के अवसर देने में सक्षम होगा।

एलुमनाइ कमेटी के अध्यक्ष मिस्टर राजा बाबू ने कहा कि इस समिति का उद्देश्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों को यहां से निकलने के बाद सही मार्गदर्शन, ट्रेनिंग, इंटर्नशिप एवं प्लेसमेंट्स दिलवाने में सहायता करना है।

इस मौके पर अनेक भूतपूर्व विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इनमें बीए प्रोग्राम के 1994 से 97 बैच के विद्यार्थी रहे और भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ फाइनेंस में असिस्टेंट कमिश्नर के पद पर कार्यरत मिस्टर विवेक कुमार जैन, 1994 से 97 बैच की माइक्रोबायोलॉजी विभाग की छात्रा और गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में प्रो. रीनू शर्मा, 1997 से 2000 बैच के विद्यार्थी आईएएस मिस्टर कुणाल शामिल रहे। इसी के साथ डॉ. राजन गुप्त, मिस नीति नागी, मिस्टर राफेल जॉस भी सम्मानित हुए। एलुमनाइ कमेटी की संयोजिका मिस साक्षी खन्ना ने एलुमनाइ वेब पोर्टल को लॉन्च कराया।

सभी चौदह विभागों के प्रतिभावान विद्यार्थियों को एलुमनाइ स्कालरशिप दी। स्कालरशिप हर पाठ्यक्रम के हर वर्ष के श्रेष्ठ विद्यार्थी को दी गई।

मीट में अनंतदृष्टि ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुति दी। दस्तूर ने सामूहिक गीत और कव्वाली की प्रस्तुति दी। मंच संचालन आस्था त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी और एलुमनाइ मौजूद रहे। सभी पुरानी यादों में खो गए। सभी एलुमनाइ ने महाविद्यालय को निहारा।

पत्रकारिता के विद्यार्थी विरासत से हुए परिचित

दिव्या, भूमिका शार्दुल

नई दिल्ली। दिल्ली केवल एक राजधानी नहीं बल्कि सदियों की यादों को समेटे एक जीवंत इतिहास है। इसी इतिहास से विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ने के उद्देश्य से रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की समिति मिरात ने 20 जनवरी 2026 को हेरिटेज वॉक का आयोजन किया। यह वॉक सफदरजंग का मकबरा और लोधी गार्डन तक रही। पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने कैमरे और जिज्ञासा के साथ इतिहास को देखने और समझने का प्रयास किया। यह वॉक स्मारकों को देखने के साथ विद्यार्थियों के लिए फीचर स्टोरी, डॉक्यूमेंटेशन और विज़ुअल स्टोरी टेलिंग का उदाहरण बनी।

हेरिटेज वॉक की शुरुआत सफदर. जंग मकबरे से हुई। हिंदी पत्रकारिता के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने विद्यार्थियों को इस ऐतिहासिक स्मारक की पृष्ठभूमि से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि यह मकबरा 1754 में अवध के नवाब सफदरजंग की याद में उनके पुत्र ने बनवाया था। यह स्मारक मुगल वास्तुकला के पतन काल का प्रतीक माना जाता है। प्रो. राकेश कुमार ने मकबरे की शैली, ऊंचे गुंबद, लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर के प्रयोग की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने समझाया कि किस तरह यह संरचना हुमायूं के मकबरे से प्रेरित है।

इसके बाद हेरिटेज वॉक लोधी गार्डन पहुंची, जहां प्रकृति और इतिहास का अनोखा संगम देखने को मिला। यहां बताया गया कि किस प्रकार ऐतिहासिक धरोहरों को शहरी जीवन के साथ संतुलित किया जा सकता है। हेरिटेज वॉक के बाद समूह के लोधी गार्डन पहुंचते ही कार्यक्रम ने पिकनिक का रूप ले लिया। हरियाली, आसमान और ऐतिहासिक इमारतों के बीच विद्यार्थियों ने आपसी संबंधों को मजबूत किया।

लोधी गार्डन में समय बिताया गया। यह समय विद्यार्थियों के लिए खास रहा। किसी ने फोटोग्राफी की। किसी ने वीडियो शूट किए तो किसी ने फीचर स्टोरी के लिए नोट्स तैयार किए। हेरिटेज वॉक में संयोजक प्रो. राकेश कुमार के साथ शिक्षक डॉ. अटल तिवारी, डॉ. सीमा भारती, डॉ. विशाल शर्मा और डॉ. देवेंद्र नाथ तिवारी समेत विद्यार्थी मौजूद रहे।

बधिर संस्कृति का दर्पण है साइन लैंग्वेज : हरीश

कृष्णा कुमार

- प्रैक्टिकल सेशन में विद्यार्थियों ने साइन लैंग्वेज सीखी
- आरएलएसी की दिव्यांग छात्र कल्याण समिति की कार्यशाला

नई दिल्ली। भाषा संस्कृति का दर्पण है। हर देश की अपनी भाषा है। ठीक इसी प्रकार साइन लैंग्वेज, बधिर संस्कृति का दर्पण है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय में 21 नवंबर 2025 को इण्डियन साइन लैंग्वेज रिसर्च और ट्रेनिंग सेंटर के असिस्टेंट प्रोफेसर हरीश सोनी ने कही।

महाविद्यालय की दिव्यांग छात्र कल्याण समिति सुगम और इण्डियन साइन लैंग्वेज रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में हरीश सोनी, प्रशिक्षक तुलसी शखूजा और अनुवादक साक्षी शर्मा विशेषज्ञ के तौर पर उपस्थित रहीं। कार्यशाला दो भागों में रखी गई।

पहले भाग में हरीश सोनी ने साइन लैंग्वेज के बारे में कहा कि बधिर लोगों या बधिर समुदाय को समझना है तो हमें साइन लैंग्वेज सीखना जरूरी है। यह लैंग्वेज अपने आप में स्वतंत्र है। उन्होंने इस भाषा में बातचीत के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में बिन्दुवार जानकारी दी।

दूसरे भाग में प्रैक्टिकल सेशन रखा गया। इसमें प्रशिक्षक तुलसी शखूजा ने अंग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षरों को साइन लैंग्वेज मे प्रैक्टिकल कर बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपना नाम साइन लैंग्वेज में बताने को कहा, जिसे कुछ विद्यार्थियों ने करके दिखलाया।

इस मौके पर समिति की संयोजिका डॉ. सोमा पाठक, सह संयोजक डॉ. कप्तान, अध्यक्ष आशु सहित कई पदाधिकारी और कई विभाग के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

खुद को बनाएं योग्य : आरजू

अंकेश स्वर्ण

नई दिल्ली। मैंने अपनी कमियों पर मेहनत की। आज आप सबके साथ मंच साझा कर रही हूं। आपको बस समय के साथ खुद को बेहतर बनाने की जरूरत है। यह बातें आरजू गंगवार ने कॉचिंग समिति की एलुमनाइ वार्ता में कहीं।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग की कॉचिंग समिति ने 19 जनवरी 2026 को एलुमनाइ वार्ता का आयोजन किया। इस अवसर पर विभाग के पूर्व विद्यार्थी अनुराग मिश्रा, शाक्षी बाथला और आरजू गंगवार ने कारपोरेट सेक्टर की मांगों पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने वर्तमान समय में कारपोरेट सेक्टर की मांग, इंटर्नशिप और नौकरी के लिए आवश्यक तकनीकी तथा बौद्धिक कौशल पर चर्चा की।

इस दौरान विभाग की कॉचिंग समिति की संयोजिका डॉ. सुप्रिया कामना एवं विभाग के शिक्षक तथा समिति के सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कैम्पस कनेक्ट के विमोचन पर प्राचार्य ने संपादक से पूछा–

कोई भी समाचार पत्र डिजाइन कर लेंगी?



आशीष राणा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के मासिक ईन्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' के 29वें अंक का विमोचन 1 अप्रैल 2026 को किया गया। विमोचन के दौरान महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार के संयोजक प्रो. राकेश कुमार, मार्च अंक की संपादक शिवानी और उपसंपादक शिवम मौजूद रहे।

प्राचार्य प्रो राकेश कुमार गुप्ता ने संपादक और उपसंपादक को बधाई देते हुए 'कैम्पस कनेक्ट' के भविष्य के अंकों पर बात की। साथ ही संपादक शिवानी से सॉफ्टवेयर पर विशेष चर्चा की। किस सॉफ्टवेयर पर काम किया, महाविद्यालय से बाहर आप अपने से अब समाचार पत्र डिजाइन कर लेंगी जैसे कई प्रश्न प्राचार्य ने किए। शिवानी ने उनका जवाब दिया। इस पर प्राचार्य ने कहा कि इसका मतलब 'कैम्पस कनेक्ट' बनाने का लाभ आपको हुआ, इस पर शिवानी बोलीं–जी सर। अंक का प्रथम पृष्ठ एनसीसी के वार्षिक दिवस विक्रांत पर केंद्रित रहा। संपादकीय पृष्ठ पर किताबों पर रुचि रखते हुए संपादक ने आत्म कथाओं को पढ़ने और अपने जीवन में अनुशासन लाने की सलाह दी।

हैकाथॉन प्रतियोगिता नहीं, नवाचार का मंच है

भारती बल

नई दिल्ली। हैकाथॉन एक प्रतियोगिता नहीं है। यह सीखने, नवाचार और व्यक्तिगत विकास का भी मंच है। हमारे कॉलेज का उद्देश्य केवल रिसर्च में योगदान देना नहीं है। विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के लिए सक्षम बनाना भी है। यह बात रामलाल आनंद महाविद्यालय की उपप्राचार्य प्रो. प्रेरणा दीवान ने 24 नवंबर 2025 को हैकाथॉन नामक आयोजन में कही।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से हुए समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया हमदर्द, ए.के.जी. इंजीनियरिंग कॉलेज और आईटीएम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में 20 टीमें शामिल रहीं। हर टीम ने महाविद्यालय के परिसर में स्टॉल लगाए, जहां जजों ने डिवाइस से संबंधित प्रश्न किए।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान टीम न्यूरोसिट ने हासिल किया। दूसरे स्थान पर टीम विजन रही। वहीं तीसरा स्थान टीम ओरिजिन ने हासिल किया। विजेता टीम को 20 हजार रुपए की नगद राशि के साथ प्रमाण पत्र व ट्रॉफी प्रदान की गई। दूसरे स्थान पर रही टीम को 15 हजार और तीसरे स्थान पर रही टीम को 12 हजार रुपए की नगद राशि के साथ प्रमाण पत्र और ट्रॉफी से नवाजा गया।

निर्णायक की भूमिका में सेण्टर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग दिल्ली की एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. प्रियंका जैन रहीं। उनका साथ इंदिरा गांधी दिल्ली टेक्निकल यूनिवर्सिटी फॉर वुमेन की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नोनीता शर्मा और शिक्षाविद डॉ. पंकज शर्मा ने दिया। रामलाल आनंद महाविद्यालय की कंप्यूटर साइंस विभाग की शिक्षिका डॉ. साक्षी शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया । इस मौके पर विभिन्न विभागों के शिक्षक प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।



रामलाल आनंद महाविद्यालय में हैकाथॉन प्रतियोगिता में विजेता टीम को सम्मानित किया गया।

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

प्रो. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष

प्रो. राकेश कुमार

परामर्शदाता

डॉ. अटल तिवारी

संपादक

दीपक कुमार

उप-संपादक

खुशबू